शोध लेख

ISSN 0975-5217
UGC-Care list (Group-I)

भैरवी

(दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कला की शोध-पत्रिका)

(वर्ष 2023 अंक 25)

मिथिलांचल संगीत परिषद्
स्नातकोत्तर संगीत एवं नाट्य विभाग
ललित कला संकाय
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय
कामेश्वरनगर, दरभंगा 846 004

प्रवर्तमान सोशीयल मीडिया के सापेक्ष ध्वनिलेखागार का महत्व (YouTube के विशेष संदर्भ में)

प्रणव पंडया (शोधार्थी)
डॉ.अश्विनी कुमार सिंह (मार्गदर्शक)

शब्दखोज : *भारतीय शास्त्रीय संगीत, परंपरा, भारतीय संगीत, हिन्दुस्तानी संगीत, घराना, ध्वनिलेखागार, ध्वनिमुद्रण, सोशीयल मीडिया, YouTube (यु-ट्यूब)*

शोध सार

यह प्रबंध प्रवर्तमान समय में YouTube को एक ध्वनिलेखागार (Archives) के रूप में स्वीकार किया जा सकता है की नहीं? इस पर एक अध्ययन है। पूरे विश्व का संगीत मोबाइल और इन्टरनेट के माध्यम से YouTube हर उम्र के लोगों तक पहुंचाता है। यह YouTube उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में किस हद तक लाभदायक या हानिकारक है ? और क्या YouTube को एक पूर्ण रूप से ध्वनिलेखागार (Archives) कहना कितना सही कितना गलत है ? इस पर एक अध्ययन इस प्रबंध में सम्मिलित करने का लेखक द्वारा प्रयत्न किया गया है।

प्रस्तावना

प्रवर्तमान समय में मनुष्य ने विज्ञान के माध्यम से मानवीय जगत से जुड़े तमाम क्षेत्रो में आमूल परिवर्तन किए हैं। ऐसी वैज्ञानिक खोजे हुई हैं कि जिसने पूरे विश्व को हाथो की मुठ्ठी मे समा लिया हो और अपनी उँगलियो से जब किसी को भी अपने मन की बात अभिव्यक्त करनी हो वह कर सके ऐसा प्रावाधान दे दिया हैं। एक दूसरे से जुडने के लिए या अपनी भावनाओं को दुनिया के किसी भी व्यक्ति या समुदाय तक पहुंचाने के लिए या अभिव्यक्त करने के लिए सोशीयल मीडिया के रूप में एक खुला मंच सभी को प्राप्त हो गया हैं। एक ऐसा समय था, जब अपने मन की बात या कला प्रस्तुति बड़े जनसमुदाय तक पहुंचाने के लिए जगह जगह घूमना पड़ता था अथवा विविध भौगोलिक क्षेत्रों में जाकर मंच प्रदर्शन करना पड़ता था, तब कहीं जाकर वह कुछ लोगों तक अपनी कलाकृतियाँ या बात रख पाते थे, फिरभी उसमे पूरे विश्व के रसिको को तो समाहित कर ही नहीं सकते थे। किन्तु प्रवर्तमान समय में सोशीयल मीडिया के माध्यम से एक ऐसा मंच तैयार हो चुका हैं कि किसी भी विषय या विचार को एक या अनेक समुदाय के लोगों तक रखना चाहो तो वह बड़ी आसानी से रख

आसिस्टन्ट प्रोफ़ेसर, डिपार्टमेन्ट ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक वोकल, फेकल्टी ऑफ़ परफोर्मिंग आर्ट्स, द महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ़ बड़ौदा, वडोदरा, गुजरात

सकते हैं। भारतीय संगीत के परिप्रेक्ष्य में भी यह एक वैश्विक प्रचार-प्रसार की उत्तम प्रणाली हैं।

वर्तमान सोशीयल मीडिया और भारतीय संगीत

संगीत के क्षेत्र में यह सोशीयल मीडिया ने वह कार्य किया हैं कि पूरी दुनिया की संस्कृति एक दूसरे से एकरूप हो गई हैं। जिसमें facebook, YouTube, twitter जैसे अनेक एप्लिकेशन के माध्यम से संगीत क्षेत्र से जुड़े विद्यार्थी, कलाकार और संगीत रसिक अपनी कलाकृति दुनिया के एक विशाल समुदाय तक बड़ी आसानी से पहुंचा सकते हैं। YouTube टेक्नोलोजी का ऐसा स्वरूप है, कि छोटे बच्चे से लेकर बूढ़े, अमीर से लेकर गरीब सभी प्रकार के लोग शिक्षण हो या मनोरंजन किसी भी रूप में इस से अवगत और लाभान्वित हैं। पूरा कला जगत ही जैसे YouTube के रूप में हाथों में सिमट कर आ गया हो ऐसा प्रतीत होता है।

फरवरी – 2005 से शुरू हुए इस YouTube को चाड हर्ली, स्टीव चेन और जावेद करीम ने आविष्कृत और नामाभिधान किया। तब से लेकर आजतक विश्वभर के सभी लोगों ने YouTube के प्लेटफॉर्म पर अनेकानेक विडियो देखना, अपलोड करना और शेयर करना शुरू कर दिया।[1] यह विधा इतनी सरल प्रमाणित हुई की बच्चे, बूढ़े सभी एकदम सरलता से तमाम क्षेत्रो से जुड़े वीडियो इस पर अपलोड करने लगे। जिसका परिणाम यह है कि एप्रिल – 2022 के सर्वेक्षण अनुसार, अब तक 2,60,00,00,000 लोग YouTube से जुड़े हुए है।[2] जिसमें संगीत के लिए अलग ही YouTube Music भी शुरू किया गया है।

विश्व के सर्व प्रकारेण संगीत का लुफ्त विश्व की जनता इस YouTube के माध्यम से उठा रही है, जिसमें हमारा भारतीय शास्त्रीय संगीत अपने आप में एक अलग ही सुगंध लिए अपनी धरोहर को सँजोये अपना स्थान बना चुका है। जिसका पूर्ण श्रेय भारतीय शास्त्रीय संगीत के उन कलाप्रेमिओं को जो भारतीय संगीत को विश्वभर में फैलाने के लिए और भारतीय शास्त्रीय संगीत की विविध परंपराओ के अनेक गुरुओ, गुनिजनो, विद्वान, रसिक, विवेचक, विद्यार्थियों के ज्ञान एवं परंपराओं को एक अलग पहेचान देने की कोशिश में उनकी रचनाएँ, प्रस्तुति, व्याख्यान मालाएँ YouTube पर अपलोड करते रहते है, उन्हे जाता है। अनेक शैक्षणिक वीडियो द्वारा दूर दराज के लोग वह ज्ञान से लाभान्वित हो सकते है जो सामान्यत: संभव नही था।

जो ज्ञान और परंपराए लोगों तक पहुँचाने में समर्थ न हो, वह भी सरलतम रूप से YouTube की इस विधा से सामान्य जनता तक पहुँच जाती है। जिससे अनेक नामी कलाकारों के साथ गुमनाम कलाकारो को भी एक अलग पहचान मिल जाती है। इनके परिणाम स्वरूप जिन कलारसिक गुनिजनों के पास जो ध्वनिमुद्रण अपने निजानंद या अभ्यासार्थ संग्रहीत था, वह "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय" मुक्त मन से YouTube के माध्यम से बाँट रहे है।

Invention of electronic media is a boon to Indian Music. From gramophone, rpm records, radio, Compact Disc (CD) to mobiles applications, YouTube, iTunes to electronic and robotic instruments the use of technology is increasing day by day in Indian classical music adding more updated versions with the changing times. Digitization to be defined is the conversion of

analogue information into digital information. Almost everything of entertainment is completely digitized in the present generation. From listening, manufacturing to the marketing of the musical tools, all are trapped in the web of digitization. Digitization has made the cost of distribution and production of recorded music cheaper compared to the traditional means. Internet plays a significant role in marketing and promotion of music. Ability to download individual songs has diminished the need of traditional music product which includes the full length album. Independent artists are able to find audience with the help of social media (Mathew, 2013). The ease with which people can access music, either legally via iTunes and other such platforms, or illegally via file sharing has coincided and perhaps been a prime mover in the drop off physical music sell, much to the chagrin of those in the industry. But on the flip side the accessibility of digital recording equipment and the ability of artist to distribute their material world wide without a record deal have opened up new and exciting opportunity for artists (Gallagher, 2013). Gap between the artist and audience is bridged up by the social media, as mentioned by Dean Shapero- "Current marketing and media have humanized the star to a greater degree than ever before. Therefore, the iconic image of the start is not as relevant as before, but the influence is as greater than ever before due to the high rates of social engagement now available" (Shapero, 2015)[3].

भारत के विविध भौगोलिक क्षेत्र में गुरु-शिष्य परंपरा या यूनिवर्सिटी में संगीत का अभ्यास करते ८० कला साधको पर किया गया सर्वेक्षण यह दर्शाता हैं कि संगीत सुनने के विविध माध्यमों में यू-ट्यूब या अन्य इंटरनेट के माध्यम से संगीत सुनने वालो की संख्या 73.30% हैं। जो यू-ट्यूब की लोकभोग्यता को दर्शाता हैं।

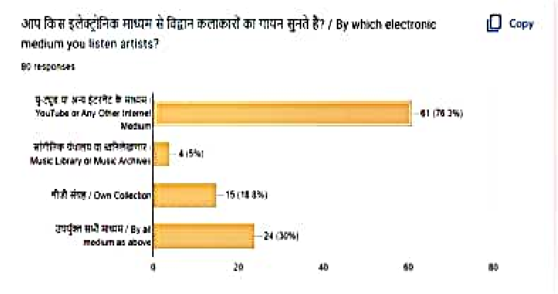

विश्वभर में भारतीय शास्त्रीय संगीत के जितने भी चाहक हैं, उन्होने भारतीय शास्त्रीय संगीत के अनेक प्रसिद्ध और दूर्लभ द्रश्य-श्राव्य ध्वनिमुद्रण को YouTube पर अपलोड करके जैसे एक सांगीतिक ग्रंथालय और ध्वनिलेखागार का एक मिला-जुला रूप सामान्य जनता के लिए उपलब्ध करा दिया हैं। विद्यार्थियों, गुरुओं, कलाकारो और रसिको द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत के अध्ययन-अध्यापन विषयक, कला प्रस्तुति और दुर्लभ दृश्य-श्राव्य ध्वनिमुद्रण खुले मंच से सांझा किए गए हैं कि जिससे संगीत क्षेत्र से जुड़े सभी लोग लाभान्वित हो रहे हैं।

यू-ट्यूब ध्वनिलेखागार के रूप में

प्रवर्तमान समय में यू-ट्यूब आर्काइव्स अस्तित्व में हैं। विश्वभर के संगीत चाहको द्वारा अपलोड किए गए अनेक दृश्य-श्राव्य ध्वनिमुद्रण से स्वत: एक संग्रह बनना सर्व सामान्य वास्तविकता है। यू-ट्यूब द्वारा किसी भी दृश्य-श्राव्य ध्वनिमुद्रण को शोध प्रक्रिया से पाया जा सकता हैं। कुछ मिले-जुले शब्दो के शोध से ही आपके शोध विषयक या उनके समान अन्य तमाम जो यू-ट्यूब में समाहित हैं वह सभी दृश्य-श्राव्य ध्वनिमुद्रण आपके सामने प्रकट हो जाते हैं और आप उनका आनंद ले सकते हैं।

सरलत्तम कार्यप्रणाली एवं निम्नलिखित बाबतों के कारण यू-ट्यूब ध्वनिलेखागार के सापेक्ष उत्तम माध्यम अनुभूत होता हैं।

ध्वनिलेखागार	यू-ट्यूब
ध्वनिलेखागार के ध्वनिमुद्रणों को सुनने के लिए निश्चित स्थान पर जाना पड़ता हैं। (हालाँकि कुछ ध्वनिलेखागार इन्टरनेट के माध्यम से अपनी कलाकृति सामान्य जनता से सांझा करते हैं।)	इन्टरनेट के माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने से एक्सेस किया जा सकता हैं।
ध्वनिमुद्रणों की संख्या कम होती हैं।	ध्वनिमुद्रणों की संख्या अधिकतम होती हैं।
ध्वनिलेखागार में ध्वनिमुद्रणों के दाता सीमित होते हैं। सभी दाताओ के ध्वनिमुद्रणों को सरलता से यह मंच और स्थान नहीं मिलता।	यु-ट्यूब में पूरे विश्व से ध्वनिमुद्रणों को एक मंच और स्थान मिलता हैं।
ध्वनिलेखागार में नियत प्रवेश प्रक्रिया पूर्ण किए बिना कोई भी ध्वनिमुद्रण तक सामान्य व्यक्ति पहुँच नहीं सकता।	सामान्य प्रवेश प्रक्रिया के बाद कोई भी ध्वनिमुद्रण तक पहुँच सकता हैं।
ध्वनिमुद्रणों के संदर्भ में श्रोताओं के अभिप्राय कम मिलते हैं।	ध्वनिमुद्रणों के संदर्भ में श्रोताओं के अभिप्राय अधिकतर मिलते हैं।
सामान्य जनता में ध्वनिलेखागार के प्रति जागरूकता बहुत कम दिखाई पड़ती हैं।	यू-ट्यूब सुप्रसिद्ध एवं सरल होने के कारण सामान्य जनता में लोकप्रिय हैं।

भारत के विविध भौगोलिक क्षेत्र में गुरु-शिष्य परंपरा या यूनिवर्सिटी में संगीत का अभ्यास करते ७८ कला साधको पर किया गया सर्वेक्षण यह दर्शाता हैं कि ध्वनिलेखागार की मुलाक़ात लेनेवाले संगीत साधको की संख्या सिर्फ १५.४०% हैं। जो ध्वनिलेखागार के प्रति बहुत कम जागरूकता को दर्शाता हैं।

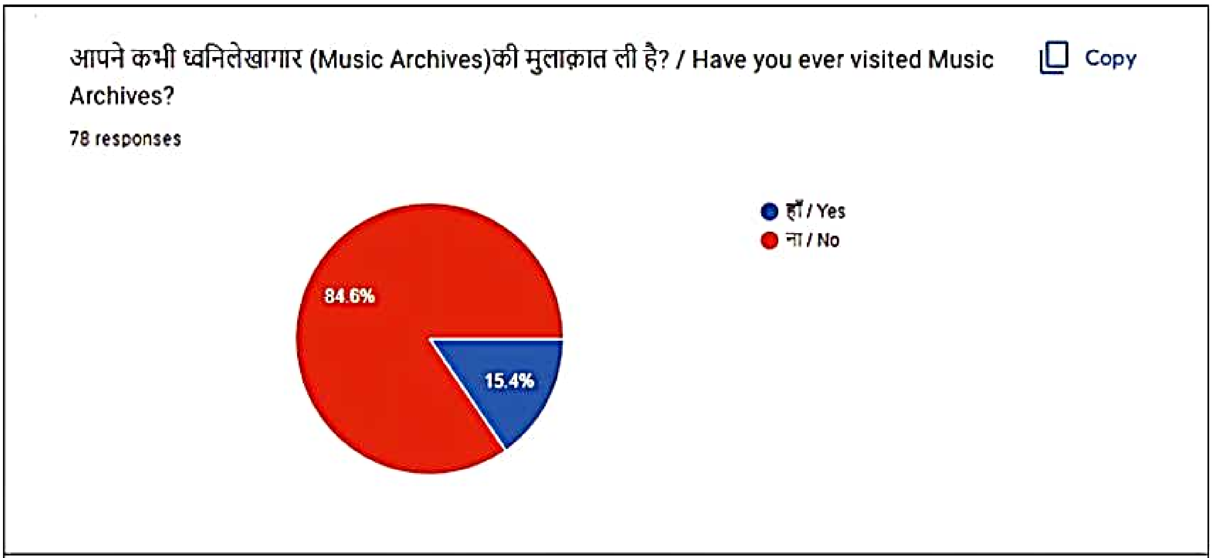

ध्वनिलेखागार सीमित क्षेत्र के लोगों से संबन्धित होने के कारण दुर्लभ ध्वनिमुद्रणों के विषय में अत्यंत प्राचीन कलाकृतियों के मिलने की संभावना अत्यंत कम होती हैं।	यू-ट्यूब के माध्यम में पूरे विश्व से जुड़ाव होने के कारण कोई ऐसी दुर्लभ कलाकृति मिलते रहने की संभावना अधिकतम होती हैं, जो प्राचीनतम हो।[4]

किन्तु, निम्नलिखित कुछ बाबतों से यू-ट्यूब पूर्णत: ध्वनिलेखागार का रूप लेने में असमर्थ दिखाई पड़ता हैं।

१. ध्वनिलेखागार में संकलित किए गए ध्वनिमुद्रणों को एक विशिष्ट रूप से वर्गीकृत करके और उनकी सम्पूर्ण माहिती की सत्यता को सुनिश्चित करके रक्खा जाता हैं। जिसके लिए उन क्षेत्रों के क्षेत्र विशेषज्ञ का मार्गदर्शन व सेवाए भी ली गई होती हैं। जबकि यू-ट्यूब में अपलोड किए जानेवाले दृश्य-श्राव्य ध्वनिमुद्रण की माहिती स्पष्ट और सत्य ही हो वह निश्चित नहीं कहा जा सकता क्योंकि अपलोड करनेवाला व्यक्ति उन विषय का जानकार हैं ही वह कह नहीं सकते।

२. ध्वनिलेखागार के ध्वनिमुद्रणों के उद्‌भव स्थान से लेकर प्रवर्तमान समय तक मूल स्वरूप को ऐसे ही बिना कोई हानि बरकरार रखा गया होता हैं और उन बाबतों पर बारीकी से कार्य किया गया होता हैं। जबकि यू-ट्यूब में ध्वनिमुद्रण के मूल उद्‌भव स्थान या उनकी मूल अवस्था में आए बदलाव पर बारीकी से ध्यान नहीं दिया जाता। उदाहरण के तौर पर किसी गायक द्वारा गाये हुए राग का ध्वनिमुद्रण एक से अधिक प्रति में उपलब्ध हो तब किसी तकनीकी वजह से या अन्य कारण से किसी ध्वनिमुद्रण में स्केल/पीच में मूल ध्वनिमुद्रण के सापेक्ष बदलाब हुआ हो तब भी वह यू-ट्यूब के माध्यम में संगृहीत होता हैं। यदि अपलोड कर्ता जानकार हैं तो सुधार की संभावना हैं, अन्यथा उन बारीक मुद्दो पर कोई ध्यान नहीं देता और त्रुटियुक्त ध्वनिमुद्रण यू-ट्यूब में मिलता हैं जो भ्रमित करता रहता हैं। हालाँकि ध्वनिलेखागार में विशेषज्ञो द्वारा ऐसे ध्वनिमुद्रणों को संग्रह से उन्हे अलग कर दिया जाता हैं।

३. ध्वनिलेखागार में संगृहीत ध्वनिमुद्रण विश्वसनीयता पर खरे उतरते हैं। जो

ध्वनिलेखागार का मूल उद्देश्य हैं। जबकि यू-ट्यूब में समाहित सामग्री की विश्वसनियता पर प्रश्नार्थ उद्भावित हो सकते हैं।

४. ध्वनिलेखागार में संगृहीत माहिती की मात्रा यू-ट्यूब के सापेक्ष सीमित होने से ध्वनिलेखागार के ध्वनिमुद्रणों की वर्गीकृत सूची उपलब्ध हो सकती हैं, जिससे शोध प्रक्रिया सरल हो सकती हैं। जबकि यू-ट्यूब में दृश्य-श्राव्य ध्वनिमुद्रणों की संख्या अधिक होने से वर्गीकृत सूची उपलब्ध नहीं होती इसलिए शोध प्रक्रिया सचोट नहीं हो सकती।

५. ध्वनिलेखागार का मूल उद्देश्य संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन हैं जो शोधार्थी को अध्ययन-अध्यापन हेतु एकाग्रता से मार्गदर्शन कराने हेतु अनुरूप माहौल दे सकता हैं। जबकि यू-ट्यूब मूलतः सामान्य जनता के मनोरंजन के हेतु निर्मित हुआ है इसलिए अध्ययन-अध्यापन प्रकिया में मूल विषय से अन्य विषयो में भटका सकता हैं।

६. भारतीय संगीत भारत की सांस्कृतिक विरासत हैं, जिनके योग्य संरक्षण और संवर्धन में भारत का सांस्कृतिक हित छिपा हैं। भारत जितना अपने देश की विरासत को लेकर संवेदनशील हैं, उतना कोई अन्य देश संवेदनशील हो वह जरूरी नहीं। यू-ट्यूब अन्य देश से संचालित होता हो और अपलोड किए गए दृश्य-श्राव्य ध्वनिमुद्रण का योग्य संरक्षण हो वह सुनिश्चित नहीं किया जा सकता। अन्य देशो में लगे प्रतिबंध यह बात प्रस्तुत करती हैं कि भारतीय परंपरा के संरक्षण के लिए यू-ट्यूब संपूर्णतः योग्य माध्यम नहीं माना जा सकता। जबकि भारत के ध्वनिलेखागार भारतीय परंपरा के संरक्षण हेतु विश्वसनीय माध्यम हैं।

७. कुछ ध्वनिलेखागार में विषय निष्णात मार्गदर्शक एवं ध्वनिलेखपाल होते हैं। जबकि यू-ट्यूब में कोई मार्गदर्शक या ध्वनिलेखपाल ही नहीं होता।

८. ध्वनिलेखागार में सामान्यतः कलाकार की अनुमति के बिना उनके ध्वनिमुद्रण नहीं रक्खे जाते। जिससे उनके आहत होने या कॉपीराइट संबन्धित प्रश्न बहुत ही कम उपस्थित होते हैं। हालाँकि अपवादरूप किस्सो में कुछ ध्वनिलेखागार में रक्खे ध्वनिमुद्रणों के प्रति कलाकारों की नाराजगी होती हैं। जबकि प्रवर्तमान समय में यू-ट्यूब आर्थिक उपार्जन का माध्यम बन जाने के कारण लालच में कई लोगों द्वारा कलाकारों की कलाकृति उनकी पूर्व मंजूरी के बिना और गरिमापूर्ण रूप से यु-ट्यूब में रक्खी नहीं जाती और कला और कलाकार का अवमूल्यन होता दिखाई पड़ता हैं जिससे कलाकार काफ़ी आहत अनुभूत करते हैं।

निष्कर्ष

प्रवर्तमान सोशीयल मीडिया के सापेक्ष ध्वनिलेखागार गुणवत्ता और विश्वसनीयता के रूप में ज्यादा कारगर साबित होता दिखाई देता हैं। जबकि सरलतम कार्यप्रणाली, लोकभोग्यता और व्यापकता को ध्यान में रखने पर यू-ट्यूब सामान्य जनता तक संस्कृति का प्रचार-प्रसार करने में ज्यादा कारगत साबित होता हैं। अनेक मुद्दो पर यू-ट्यूब योग्य और सरल होने के बावजूद संस्कृति के जतन, संरक्षण, संवर्धन एवं विद्यार्थी, गुरु और कलाकारो के संबंध में ध्वनिलेखागार की तरह विश्वसनीयता में खरा

नहीं उतर सकता। ध्वनिलेखागार को सामान्य जनता में लोकभोग्य एवं उपयुक्त करने के लिए प्रचार-प्रसार की और यू-ट्यूब की तरह सरल कार्यप्रणाली अमली करने की आवश्यकता हैं।

संदर्भ सूची

1. Norlidah Alias*, Siti Hajar Abd Razak, Ghada elHadad, Nurul Rabihah Mat Noh, Kokila Kunjambu, Parimaladevi Muniandy / A content analysis in the studies of YouTube in selected journals / Department of Curriculum & Instructional Technology, Faculty of Education, University of Malaya (2013)
2. https://en.wikipedia.org/wiki/YouTube
3. Vedabala, Samidha / "Indian Classical Music : Traits and Trends" / published by Research Trend / ISSN No. (Online): 2319–5231 / International Journal on Arts, Management and Humanities 6(2): 167-174(2017) / page 5

साक्षात्कार

4. Das Gupta, Amlan / The founder of the archive, Ex-Director, School of Cultural Texts and Records, November-2022
5. Pradhan, Anish / International Tabla Player, New Delhi, November-2022

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता®

Issue-46, Vol-05, April to June 2023
Peer Reviewed International Multilingual Research Journal

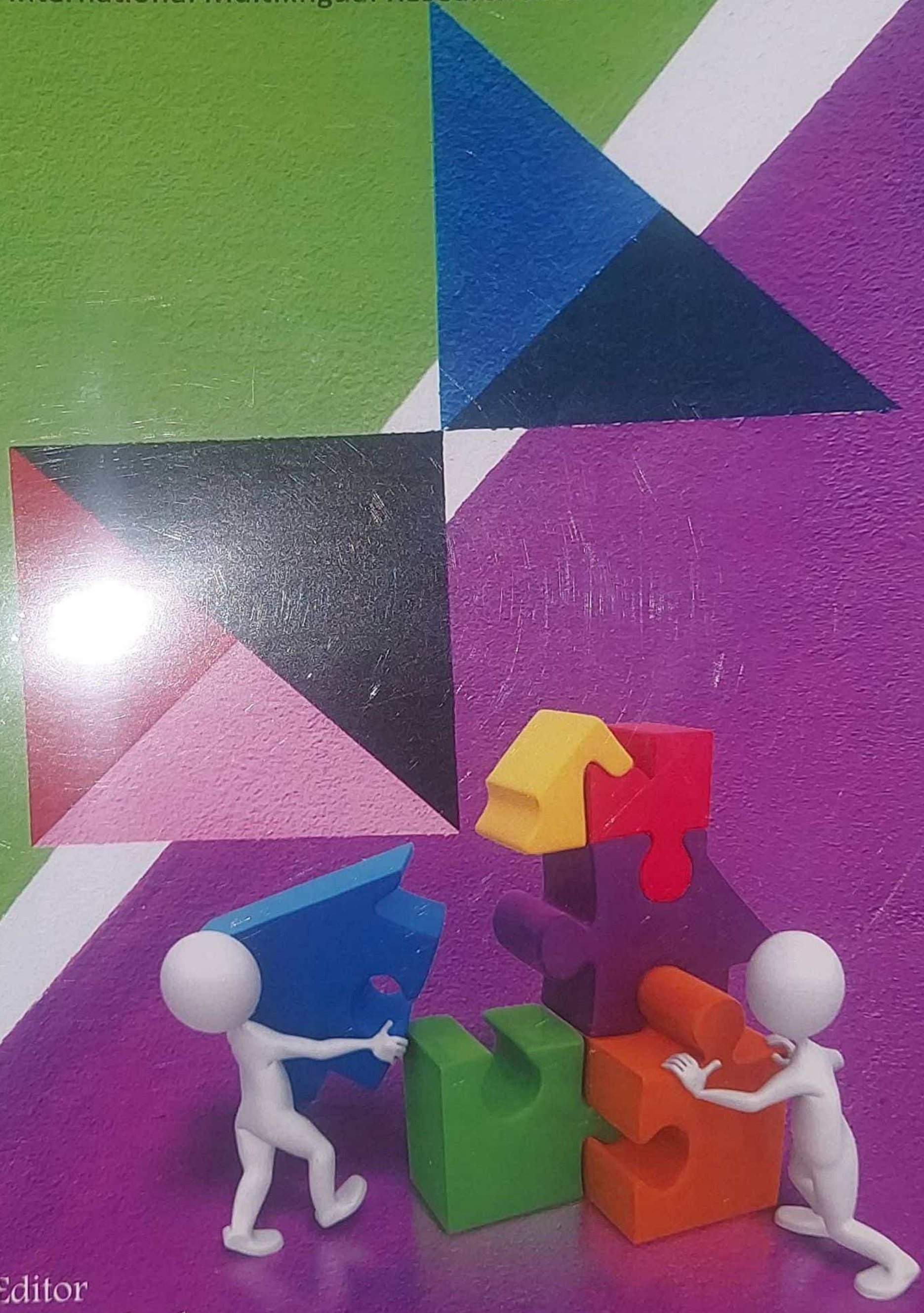

Editor
Dr.Bapu G. Gholap

26) मोहन राकेश की कहानियों में पारिवारिक संबंध
डॉ. मोहम्मद इसराइल, दिल्ली ||120

27) महिला सशक्तिकरण एवं शासकीय योजनाएं
मधुरा महिलांगे, डॉ.के.पी.कुर्रे, नगरदा, छत्तीसगढ़ (भारत) ||124

28) सप्तक संगीत समारोह एवं ध्वनिलेखागार
प्रणव पंडया, डॉ.अश्विनी कुमार सिंघ, वडोदरा, गुजरात ||130

29) यथार्थ से परिपूर्ण प्रेमचंद की दलित कहानियाँ
रवि कुमार, AMBALA CITY ||136

30) कठोपनिषदि अद्वैततत्त्वानाम् अन्वेषणम
Sabana Khatun, Tirupati, Andharapradesh ||139

31) माओवादी समस्या के उन्मूलन में सहायक सशस्त्र पुलिस बल की भूमिका छत्तीसगढ़ ...
रतन लाल डांगी, दुर्ग, छत्तीसगढ़ ||145

32) शिक्षण संस्थानों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का योगदान
विकास कुमार गुप्ता, प्रोफेसर पुनीता रानी माहेश्वरी, आगरा ||156

33) सामाजिक विज्ञान में गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान के सैद्धांतिक ढाँचे का अध्ययन
डॉ. राम सरदार यादव, मुकेश कुमार, अयोध्या, उ. प्र. ||160

34) सामान्य एवं अनुसूचित जाति के युवा वर्ग की दहेज सम्बन्धी मानसिकता पर शिक्षा ...
डॉ० राजीव कुमार जैन, फिरोजाबाद ||163

35) क्या पक्षद्रोही अभियोक्त्री यौन अपराधों में प्रतिकर प्राप्त कर सकती है Whether hostile ...
NEETU JANGIR ||170

36) वर्तमान में महिलाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं : एक अध्ययन
प्रकाश चन्द्र गौड, डॉ० ममता चौधरी, गोरखपुर ||175

37) पारधी समुदाय की सांस्कृतिक सीमाए एवं समाधान
डॉ. रविन्द्र अर्जुन पवार, वाशिम ||179

38) बंजारा समुदाय की २१वि सदी में सांस्कृतिक मर्यादाए एवं व्यवसायिक समाज कार्य
डॉ. वसंत मोतीराम राठोड, वाशिम ||183

www.vidyawarta.com/03_ http://www.printingarea.blogspot.com

28

सप्तक संगीत समारोह एवं ध्वनिलेखागार

प्रणव पंडया
(शोधार्थी)

डॉ.अश्विनी कुमार सिंघ
मार्गदर्शक, आसीस्टन्ट प्रोफेसर,
डिपार्टमेन्ट ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक
वोकल, फेकल्टी ऑफ परफोर्मिंग आर्ट्स,
द महाराजा सयाजीराव यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा,
वडोदरा, गुजरात

****

शब्दखोज : भारतीय शास्त्रीय संगीत, परंपरा, भारतीय संगीत, हिन्दुस्तानी संगीत, घराना, ध्वनिलेखागार, ध्वनिमुद्रण, सप्तक संस्था, सप्तक संगीत समारोह, गुजरात

शोध सार :

गुरुकृपा से अनेक बरसो की कठिन साधना के बाद प्राप्त ज्ञान भावी पीढ़ी को दे न सके या उनकी साधनाओ की पराकाष्ठा, विचार और कलात्मक अभिगम नई पीढ़ी तक पहुँचा न सके तो संस्कृति पूर्णरूप से खिल नही सकती। ध्वनिलेखागार अनेक गुरुओ के ज्ञान को उसी के मुख से प्रस्तुत कर सकता है। ध्वनिलेखागार के माध्यम से गुरु एवं उनकी परंपराए जीवंत रहती है। संगत ही रंगत बनाती है। यह गुरु अच्छे से जानते है इसीलिए बाल्यकाल में जिस माहोल में जिया जाये हम वैसे ही हो जाते है। आध्यात्मिक शब्दो में कहे तो संस्कार। सांगीतिक संस्कार आवश्यक है। गुरु ही संगीत जैसी अमूर्त विद्या के संस्कार दे सकते है। गुरु अनिवार्य है, अन्य कोई विकल्प ही नही है। ऐसे सांगीतिक संस्कार गुनिजन, गुरुजन, पंडित—उस्ताद से दूर रहकर संभव ही नही। गुरु यह जानकार इस व्यस्त युग में कैसे सांगीतिक संस्करण हो वही उमदा प्रयत्नो में रत रहते है। ऐसे ही एक गुरु पंडित नंदन महेता जी के सांगीतिक प्रेम का चिह्न जो भावी पीढ़ी के लिए आशीर्वादरूप बना वह है, अहमदाबाद, गुजरात स्थित सप्तक समारोह एवं ध्वनिलेखागार।

प्रस्तावना :

अनंत जन्मो के सत्कर्म एवं पुण्य के फलस्वरूप i je—i ky qi jeRek d h—i kf'V l s८४ लाख जन्मों के बड़े अंतराल के बाद, मनुष्य देह प्राप्त होता है। यह मनुष्य अवतार में वह सामार्थ्य है कि मानव से महमानव की और प्रस्थान करके देवत्व प्राप्त कर सकता है। इसी मनुष्य अवतार में ऐसा मन, मति और शक्ति होती है, जिसमें ईश्वर उपासना उत्तम रूप से हो सकती है। परमात्मा स्वयं मानव देह धारण करने के लिए प्रेरित हो और देवो के लिए भी दूर्लभ ऐसे मानव अवतार का रहस्य सिर्फ यही है, कि उसमे जीव को शिव में परीवर्तित करने की क्षमता है। इसीलिए योगी—जोगी संसार का त्याग करके सदैव परमात्मा की खोज मे रत रहेते है। शिव और उसके बाद सरस्वती से प्रवाहित यह सामवेदी संगीत ही इतना सामर्थ्यवान है कि वह परमात्मा की प्रतीति पलमात्र में करवा सकता है। शुद्ध और सात्विक संगीत के स्वर ब्रह्मनाद बनकर योगीओ की अनेक बरसो की तपस्या का अर्क बनकर ईश्वर प्राप्ति का कारण बनता है। प्रणवनाद में से व्याप्त यह शुद्ध संगीत ही एकमात्र कला है जिससे सांसारीक मोह—माया में रहते हुए भी ईश्वर के समीप जाया जा सकता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत आदि—अनादि काल से अविरत चला आ रहा है। सर्वे भारतीय कला गुरुमुखी रही है। सर्वे भारतीय कला गुरुमुखी रही है। यह अद्भुत परंपरा का निर्वाह एक पीढ़ी से आगामी पीढ़ी तक प्रवाहित होता है। जिसमे अनेक गुरुजन, वाग्गेकर, कलाकार, गुणीजन और विवेचको का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहता है। अनेकविध राग, रचनाए और उसके सौंदर्यात्मक शैली को देखना और अनुभूति का अभिगम व्यक्तिगत रूप से भिन्न रहा है। इसीलिए यह परंपरागत कलाए नए आयामो तथा विभिन्न द्रष्टिकोण प्राप्त करती रहती है। यह सभी कलाए भावी पीढ़ी मे

संगृहीत और संवर्धित होती रहे इसलिए अनेक ज्ञाताओ ने प्रयत्न किए है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर जी और पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे जी ने परंपरागत बंदिशों को संगृहीत करने और वाग्गेकार–कलाकारो की सांगीतिक विचारधारा को मुक्त मन से सभी साधको में बाँटने के लिए स्वरलिपी की रचना की। जिससे अनेक बंदिश – रचनाए आज भी जीवंत रह सकी हैं, किन्तु ध्वनिमुद्रण की प्रौद्योगिकी (Recording Technology) के विकास के बाद अत्यंत सटीक रूप से कलाकारो की कलाकृतिओ का दस्तावेजीकरण और अन्य तक पहुंचाना संभव हो सका हैं। ध्वनिमुद्रण के यह अभिलेखागार अभ्यासु साधको के लिए पथप्रदर्शक और उनकी परम्पराओं के निर्वहन के लिए आशीर्वाद रूप है।

सप्तक संगीत समारोह :

भारत का शायद ही कोई शास्त्रीय संगीत का कलाकार या साधक हो, जो अहमदाबाद, गुजरात में प्रति वर्ष आयोजीत होते सप्तक संगीत समारोह के विषय में न जानता हो। भारत के कुछ चुनंदा शीर्षस्थ और भव्य शास्त्रीय संगीत के समारोह में यह समारोह का नाम अंकित हैं। शायद यह भारत का सबसे लंबे समय (प्रति वर्ष १ जनवरी से १३ जनवरी) तक चलनेवाला एक लौता संगीत समारोह हैं, जिसमें भारत के लगभग तमाम शीर्षस्थ कलाकार हाजरी देने आते हैं। कलाकारों की यह चाहना रहती हैं कि वह कभी न कभी इस भव्य समारोह का हिस्सा बने और अपनी प्रस्तुति इस मंच से प्रस्तुत कर सके।

संगीत के विद्यार्थी को प्रत्यक्ष सांगीतिक शिक्षण गुरु देते हैं। पहले के जमाने मे गुरु स्पष्ट कहते थे, पहले कुछ मत सोचो मैं जो कहता हूँ बस वही दोहराओ। प्रत्यक्ष रूप में सीखाने की प्रक्रिया के भागरूप प्रत्यक्ष महफिले सुनना अध्ययन का एक हिस्सा हैं और साक्षात जीवंत प्रस्तुति एक अलौकिक अनुभव होता हैं। यह समारोह के सायंकालीन प्रस्तुति की शुरुआत सप्तक के विद्यार्थीओ द्वारा या उभरते कलाकारो के द्वारा होती है। जो युवा कलाकारो को एक उत्कृष्ट मंच प्रदान करता है।

यह सप्तक समारोह मुख्यत: चार उद्देश्यों से आयोजीत किया जाता है।

१. सप्तक के छात्रों के लिए शिक्षा और प्रेरणा के स्रोत के रूप में।

२. संगीत के विद्यार्थीओ के काम को समझदार और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील दर्शकों के सामने पेश करना।

३. विश्व स्तर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत की सराहना बढ़ाने और हमारी सांस्कृतिक परंपराओं का प्रचार करने के लिए।

४. कलाकारों, आलोचकों और पारखियों के लिए एक अंतरराष्ट्रीय बैठक होने के लिए।

जैसे ही शाम ढलती है, भारतीय शास्त्रीय संगीत के कुछ सबसे प्रसिद्ध कलाकार मंच पर आ जाते हैं। यह अपने शुद्धतम रूप में संगीत का उत्सव है। कोई टिकट नहीं है, कोई आरक्षण नहीं है, और हॉल में केवल पहले आओ पहले पाओ के आधार पर निमंत्रण मिलता है। अत्यधिक जानकार और संवेदनशील संगीत पारखियों और सीखने के प्रति उत्साही लोगों के साथ, कलाकार सप्तक में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित होते हैं।

दर्शकों को स्थापित उस्तादों से पुराने ख्याल प्रदर्शनों का आनंद मिलता है, उनके पास ध्रुपद गायकी, ठुमरी, राजस्थानी लोक संगीत, सितार, सारंगी, बांसुरी, मोहन वीणा, रुद्र वीणा और तालवाद्य के साथ गायन का अनुभव करने का अवसर होता है। महान समकालीन संगीतकारों और फ्यूजन के संगीत प्रयोग द्वारा तबला, पखावज और यहां तक कि मृदंगम की भी प्रस्तुति होती हैं। लगभग १२५ शीर्ष कलाकारो और १३ दिनों में फैले लगभग ५० प्रदर्शनों के साथ (२ सुबह की बैठकों सहित १५ बैठकें), पूरे भारत और विदेशों के छात्र

और संगीत प्रेमी सप्तक संगीत समारोह में एक अद्वितीय अनुभव के लिए एकत्रित होते है।

सप्तक के स्थापना के बाद से, वार्षिक समारोह की योजना संगीतकारों को पेश करने की दृष्टि से बनाई गई है, जिनकी कलात्मकता और संगीत का ज्ञान युवा छात्रों को प्रेरित करेगा। ये संगीतकार युवा कलाकारो के लिए भी प्रेरणादायी हैं। कई दिनों तक चलने वाले समारोह का विचार भी कलाकारों का एक प्रकार का सम्मेलन बनाना है। समारोह में जब एक कलाकार अपनी प्रस्तुति करता है तो कई अन्य कलाकार सामने दर्शकों के बीच मौजूद होते हैं। कलाकारों और संगीत प्रेमियों के बीच, कलाकारों और छात्रों के बीच और स्वयं कलाकारों के बीच, पर्दे के पीछे और अंतराल के दौरान, दोनों में काफी बातचीत होती है। समारोह के माहौल में कलाकार, संगीत प्रेमी, संगीत के विद्यार्थी और सदस्य मिलते हैं। सांगीतिक विचार विनिमय होता हैं और दोस्ती बनती है। यह संगीत के विस्तार के लिए कार्य करता है।

सप्तक समारोह संगीतकारों द्वारा संगीत की देवी को एक सामूहिक भेंट है। आयोजन स्थल को मंदिर में तब्दील कर दिया गया है। यहां, संगीत मनोरंजन से आध्यात्मिकता की ओर बढ़ता है, उत्तेजना से उच्च बनाने की क्रिया तक। मिजाज भक्ति का है न कि सिर्फ भाईचारे का। शास्त्रीय संगीत की सभी प्रमुख हस्तियां साल–दर–साल उत्साहपूर्वक अपना समर्थन देती हैं, जैसा कि उनकी उपस्थिति की संख्या से देखा जा सकता है।

सप्तक समारोह की कुछ अनूठी विशेषताएं

है। इस तथ्य के बावजूद कि इस समारोह में बड़ी संख्या में प्रशंसकों को आकर्षित करने वाले कुछ प्रतिष्ठित संगीतकार मौजूद हैं, फिरभी कोई औपचारिक उद्घाटन नहीं है, कोई भाषण नहीं हैं, समारोह पूरी तरह से सभी औपचारिक तामझाम से मुक्त है।

सप्तक द्वारा वार्षिक संगीत समारोह के साथ साथ पंडित नंदन महेता शास्त्रीय ताल वाद्य स्पर्धा एवम संगीत समारोह, गुरुपूर्णिमा महोत्सव और संगीत संकल्प सप्ताह जैसे अन्य समारोह का आयोजन किया जाता हैं। जिसमे गुजरात के ही नहीं भारतभर के उभरते कला साधको को मंच प्रदान करके उनकी कलाको सराहा जाता हैं।

सप्तक ध्वनिलेखागार :

गुजरात स्थित सांगीतिक रूप से अति समृद्ध ध्वनिलेखागार यानि अहमदाबाद, गुजरात स्थित सप्तक ध्वनिलेखागार। सप्तक संस्था के स्थापक और विश्वप्रसिध्ध तबला वादक पंडित नंदन महेता जी की संगीत के साधको, कलारसिको, विचारको और शोधार्थीओ को दी गई हुई सबसे उत्तम भेंट – सौगाद यानि सप्तक ध्वनिलेखागार।

संगीत को उसके प्रामाणिक संस्करण में संरक्षित करने के प्रयास में, सप्तक अभिलेखागार की स्थापना सन २००४ में सप्तक के रजत जयंती वर्ष, संगीत रिकॉर्डिंग को डिजिटाइज करने के लिए की गई थी। रिकॉर्डिंग को कई अन्य विवरणों से समृद्ध किया जाता है जैसे कलाकारों की संक्षिप्त जीवनी रेखाचित्र, रिकॉर्डिंग का स्थान और समय, प्रदर्शन विवरण और रागों के बारे में जानकारी भी संग्रहीत की जाती है।

सन २००४ से पंडित नंदन महेता जी द्वारा की गई तमाम अंगत सांगीतिक बैठक और ज्ञान गोष्ठी में से अर्जित ज्ञान एक सीमित दायरे मे न रहे और अन्य वर्ग भी लाभान्वित हो वह उमदा हेतु से पंडित जी द्वारा सप्तक ध्वनिलेखागार का निर्माण किया गया है। जो आज भारत का सबसे समृद्ध और डिजिटाइज्ड ध्वनिलेखागार माना जाता है। १०,००० से अधिक घंटो का द्रश्य–श्राव्य संगीत और २,५०,००० जे अधिक ध्वनिमुद्रण और दूर्लभ पुस्तक सप्तक ध्वनिलेखागार में समाहित है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के लगभग कोई भी

कलाकार का ध्वनिमुद्रण इस सप्तक ध्वनिलेखागार से अलिप्त नही है। सभी कलाकारो और उनकी परंपराओ को सप्तक ध्वनिलेखागार में सम्मान के साथ स्थान मिला है।

समस्त भारत के विश्वप्रसिध्ध कलाकारो को गुजरात में एक स्थान पर लाकर उनकी कलाओको प्रोत्साहित कर उन्ही की परंपराओ को आज के अत्याधुनिक टेक्नोलोजी से संगृहीत किया जाता है। जिसका लाभ लगभग संगीत के सभी धाराओ के साधको को मिलता रहता है। यह परंपरा पंडित नंदन महेता जी ने सन १९८२ से उनके अंगत कलाकार मित्रों के साथ अपने ही घर शिव सदन से शुरू की थी जो आज विश्वप्रसिध्ध सप्तक संगीत समारोह से लोगो के हृदय में स्थान ले चूका है। जो प्रति वर्ष दिनांक ग से १३, जनवरी में अहमदाबाद, गुजरात मे आयोजीत होता है। उनके सभी ध्वनिमुद्रण इस सप्तक ध्वनिलेखागार मे समाहित है।

सप्तक ध्वनिलेखागार का उद्देश्य :

गुरुओ के माध्यम से निर्वाहित होती संगीत जैसी अमूर्त विधाओ मे पथप्रदर्शक अति आवश्यक है। जो गुरु और समग्र गुरूपरंपरा सदैव मार्गदर्शक के रूप मे साथ रहे तो, विद्यार्थी का ज्ञान परिपक्वता के शिखर सर कर सकता है। इतना ही नही, नए आयामों के निर्माण के लिए कारणभूत बनता है।

सप्तक ध्वनिलेखागार का उद्देश्य संगीत विषयक विचार–विमर्श और परंपराओ के विषय में विद्वानो के द्वारा की गई चर्चा, सांगीतिक रचनाए, साधको के अनुभव जिसको भविष्य में कोई नकार न सके, जिसने अपना पूर्ण जीवन संगीत की सेवा में समर्पित किया हो ऐसे ज्ञानीओने अपनी तालीम के दौरान अर्जित किया हुआ ज्ञान, अनुभव जो विद्यार्थीओ और गुनिजनों को उपयोगी हो सके वेसे साधको एवं आगामी पीढ़ी तक पहुंचाने का है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के कोई भी घराना के नामी–अनामी कलाकार विषयक माहिती और प्रवर्तमान परिस्थिति का चितार मिल सके। घराना के उद्भव से लेकर आज दिन तक कालक्रम से हुए परिवर्तनों का अभ्यास भी कर सकते है। ग्वालियर, आग्रा अत्रोली, किराना, पटियाला, विष्णुपुर, बनारस, भिंडीबाजार, मेवाती, इंदोर, शाम चौरासी जैसे गायिकी के घराना, दिल्ही, पंजाब, अजराड़ा, फरुखाबाद और बनारस जैसे तबला के घराना का विस्तृत अभ्यास कर सकते है। ध्रुवपद, धमार, तराना, ठुमरी, कजरी, चौती, बारहमासा वगैरे शैलीओका तलस्पर्शी अभ्यास किया जा सकता है। अत: विद्यार्थियो को प्रारम्भिक से लेकर उच्चकक्षा की माहिती मिल सके।

सप्तक ध्वनिलेखागार का उद्देश्य डिजिटल मीडिया (सीडी, डीवीडी, हार्ड डिस्क) में दीर्घकालिक संरक्षण, भंडारण, संकलन और पुनर्प्राप्ति के लिए विभिन्न मीडिया (स्पूल, कैसेट, ७८ आर.पी.एम. एलपी रिकॉर्ड आदि) में रिकॉर्ड किए गए इस संगीत को डिजिटाइज करना है। २००० चौरस फिट में फैला हुआ है। सप्तक ध्वनिलेखागार के पास एक उच्च सक्षम टीम है जिसमें एक संगीतज्ञ और संगीत और डिजिटल प्रौद्योगिकी में पारंगत विशेषज्ञ शामिल हैं।

सप्तक ध्वनिलेखागार दिग्गजों और दिग्गजों द्वारा कार्यशालाओं का आयोजन करता है, जिसमें छात्र, शिक्षक और संगीत प्रेमी शामिल होते हैं, जिनकी समझ इन इंटरैक्टिव सत्रों के माध्यम से गहरी होती है।

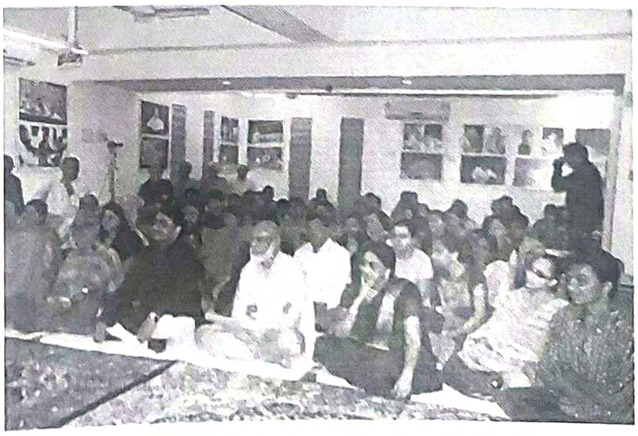

यह बैठक संगीत कार्यक्रम भी आयोजित करता है। इनमें संगीतकार राग और बंदिशें पेश करते है, जो सार्वजनिक समारोहों में कम ही सुनने को मिलते हैं। सुनने के सत्र भी आयोजित किए जाते है जहां सूक्ष्म बारीकियों और सौंदर्यशास्त्र की सराहना करने के लिए विशेषज्ञों द्वारा एक टिप्पणी के साथ—साथ चुनिंदा टुकड़े बजाए जाते है।

संगीत रचनात्मक विधा है। यदि उसमे नूतनता को स्थान न हो तो यह विधा मृत अनुभूत होगी। अनेक अनेक वाज़ेकार द कलाकारो द्वारा अनुभूति के अर्क समान बंदिशे स्वरबद्ध की गई है उनसे भी साधक और भावी पीढ़ी अवगत हो वह भी ध्वनिलेखागार का उद्देश्य है।

सप्तक ध्वनिलेखागार में कई कार्य—स्टेशन, श्रवण पोस्ट, एक कॉन्सर्ट हॉल, भंडारण कक्ष और एक मल्टी—मीडिया संगीत पुस्तकालय है। यह ६५० से अधिक कलाकारों के ६००० घंटे के संगीत को डिजिटाइज करने में सक्षम है। एक खजाना चेस्ट बनाने के अपने प्रयासों में, सप्तक ध्वनिलेखागार निजी संगीत संग्रहकर्ताओं को इस संगीत विरासत को संरक्षित करने के लिए अपने संग्रह को दान करने के लिए आमंत्रित करता है।

सप्तक ध्वनिलेखागार मे समाहित दूर्लभ ध्वनिमुद्रण:

किसी भी कलाकार की अपनी नवनिर्मित कलाकृति अपने बालक की तरह होती है। जैसे एक पिता को अपने बालक को समाज में स्वीकृति और सम्मान मिले तो पिता का सीना चौड़ा हो जाता है, वैसे ही कलाकारो को उनकी कृति /रचनाए उतनी ही प्यारी होती है। सांगीतिक कला जगत में उनकी कलाकृतिओ को मान—सम्मान प्राप्त हो तो इस पल पल नाशप्राय: जगत मे कलाकार अमरता अनुभूत करता है। ऐसे अनेक मूर्धन्य कलाकारोने अपनी जीवन की तमाम सांगीतिक संपत्ति अपने अनुयायीओ को मुक्त मन से सोंप दी हो ऐसा ध्वनिलेखागार में अनुभूत होता है। जिसकी जितनी पात्रता उतना वह कोई भी साधक अपनी क्षमता के अनुसार अगाढ़ ज्ञानसागर में से ले सके। कुछ ध्वनिमुद्रण सिर्फ अध्ययन—अध्यापन प्रणाली को ध्यान में लेकर बनाए गए है। गुजरात इतना नसीबदार है की भारत के अत्यंत समृद्ध सांगीतिक अतुल्य परंपराओ को सप्तक ध्वनिलेखागार के रूप मे सँजोये रखा है।

सप्तक ध्वनिलेखागार की भविष्यलक्षी योजनाए:

एक संगीत पुस्तकालय स्थापित करने के बाद जहां संगीत प्रेमी, छात्र, पारखी, शोधकर्ता, संगीत गुरु और संगीतज्ञ भारतीय शास्त्रीय और पारंपरिक संगीत के व्यापक प्रदर्शनों को सुन सकते हैं, सप्तक ध्वनिलेखागार एक केंद्रीय डेटाबेस बनाने के लिए अन्य ध्वनिलेखागार और संगीत पुस्तकालय के साथ नेटवर्किंग करना चाहता है।

सप्तक ध्वनिलेखागार एक समाचार पत्र (मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक) लाने की भी योजना बना रहा है जिसमें संगीत कार्यक्रमों, गतिविधियों, संग्रह/पुस्तकालय नोट्स और प्रकाशित संगीत की समीक्षाओं के बारे में दिलचस्प समाचार होंगे।

विभिन्न स्वरूपों में पूरे देश में कई निजी संग्रह बिखरे हुए हैं। इनमें से कुछ बहुमूल्य विरासत हैं और इन्हें संरक्षित करना महत्वपूर्ण है। जैसा कि कई लोगों के पास बुनियादी ढांचा, विशेषज्ञता, तकनीक या संगीत को डिजिटाइज करने के साधन नहीं हैं, सप्तक ध्वनिलेखागार डिजिटाइजिंग और आर्काइविंग के लिए अपनी सेवाएं प्रदान करता है।

भविष्य में, इस अभिलेखीय बैकअप के साथ वेब प्रौद्योगिकी या एफएम रेडियो पर आधारित एक प्रसारण सेवा का आयोजन किया जा सकता हैं, जो समग्र विश्व के भारतीय शास्त्रीय संगीत के साधको के लिए बहुमूल्य तौफा होगा।

सप्तक ध्वनिलेखागार की मंशा संगीत की सेवा ही है। सप्तक ध्वनिलेखागार में पंडित नंदन महेता

आर्ट गेलेरी की शुरुआत की गई है। जिसमे उच्चकक्षाके कलाकारो के साक्षात्कार, व्याख्यान, ताल वाद्य स्पर्धा वगैरे का आयोजन किया जाता है। अन्य कलाकारो या संगीत प्रेमीओने निजी शौख या सांगीतिक प्रेमवश एकत्रित की गए ध्वनिमुद्रणोंको सप्तक धनिलेखागार में समाहित की गई है।

ध्वनिलेखागार सागर समान होने के कारण किस कक्षा में क्या सुनना? कैसे सुनना? उनका अपने निजी सांगीतिक विकास में कैसे उपयोग करना? किस कलाकार का प्रस्तुति के दौरान कैसा अभिगम रहा होगा ? कलाकारोकी परंपरा मे क्या विशेष तत्व समाहित है? रस निष्पादन की पद्धतियाँ वगैरे जैसे अनेक प्रश्नो के उत्तर विद्वानो की निश्रा मे मिल सकता है। ऐसे उच्चकोटी के विद्वानो की मदद से ध्वनिलेखागार का महत्तम उपयोग कैसे हो सकता है ? उस दिशा में व्यवस्थाए बनाने की योजना है।

इनके साथ बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय की विचारधारा को लक्ष्य में रखकर इंदिरा गांधी नेशनल सेन्टर फॉर आर्ट्स, नई दिल्ही के साथ जुड़कर भारतीय शास्त्रीय संगीत को एक मंच पर लाने में सप्तक ध्वनिलेखागार महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। सप्तक ध्वनिलेखागार द्वारा न केवल श्राव्य, किन्तु द्रश्य–श्राव्य ध्वनिमुद्रण की व्यवस्थाए की गई है। इन्टरनेट के माध्यम से न केवल गुजरात, बल्कि वैश्विक फलक पर उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की सुवास फैले और परंपरा मे लिप्त नवोदित कलाकारो को दुनिया जाने उनके लिए सप्तक सदा प्रयत्नशील है। सप्तक ध्वनिलेखागार द्वारा कोरोना महामारी के दौरान, विभिन्न घराना एवं कलाकार की ह्यह्व जितनी चुनंदा प्रस्तुति सामान्य जनता की सेवा में पोडकास्ट की गई हैं, जिसमे शोधकर्ता या संगीतज्ञ द्वारा उस प्रस्तुति के विषय में विवरण किया जाता हैं। जो पोडकास्ट परंपरा कोरोना महामारी को ध्यान में रखकर शुरू की गई थी, वह उसके बाद आज भी शुरू हैं और सामान्य जनता का बहुमूल्य प्रतिसाद भी मिला हैं।

शोध सार :

संगीत मनुष्य को ईश्वर की भेंट है। आध्यात्मिक जगत के महापुरुष अनेक बरसो की साधना के बाद समाधि अवस्था प्राप्त करते है। जो इस सांगीतिक क्षेत्र के साधको सहज प्राप्त होता है। आध्यात्मिक परंपरा में ब्रह्म नाद का महिमागान है। इसीलिए ईश्वर के निराकार स्वरूप को व्यक्त करता प्रणवनाद भारतीय संगीत परंपरा को मिली सौगात है। सप्तक द्वारा आयोजीत संगीत समारोह में जो आंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कलाकारो द्वारा कला प्रस्तुति होती है उनका लाभ सामान्य जन समुदाय को मिले और उनके ध्वनिमुद्रणों का लाभ संगीत से जुड़े साधको और चाहको को मिले इसलिए बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय को ध्यान मे रखकर संगीत की सेवा मे सप्तक कार्यान्वित है। सप्तक की मुलाकात भारतीय शास्त्रीय संगीत साधको और कला प्रेमियो के लिए ज्ञानवर्धक और अनुभवों में वृद्धिकर्ता होने के कारण अति आवश्यक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1 bUVjusV/https://www-saptak-org/saptakTab/
2 https://saptakarchives-org/about/
3 https://www-saptak-org/saptakDesk/saptakArchives: मुलाकात :
४. सप्तक ध्वनिलेखागार, अहमदाबाद, गुजरात / दिसंबर, २००८ से जूलाई, २०१८ : साक्षात्कार :
५. महेता, मंजूबेन / ट्रस्टीश्री, सप्तक संस्था, अहमदाबाद / दिसंबर–२०१७
६. जोषी, संदीप / ट्रस्टीश्री, सप्तक संस्था, अहमदाबाद / दिसंबर–२०२२

⌘⌘⌘